मनसा सेवा - 46

अव्यक्त बापदादा :- (31/12/1989)

➳ _ ➳ नये वर्ष में जादू का मन्त्र यूज़ करो। यह नवीनता वा विशेषता करो और जादू का मन्त्र क्या है? मन्सा और वाचा-दोनों का मेल करो। दोनों का बैलेन्स, दोनों का मिलन - यही जादू का मन्त्र है। जब मन्सा में सदा शुभ भावना वा शुभ दुआयें देने का नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो मन्सा आपकी बिजी हो जायेगी। मन में जो हलचल होती है, उससे स्वत: ही किनारे हो जायेंगे। अपने पुरुषार्थ में जो कभी दिलशिकस्त होते हो वह नहीं होंगे। जादू मन्त्रहो जायेगा।

➳ _ ➳ संगठन में कभी-कभी घवरा जाते हो। सोचते हो - हमने तो वायदा किया था 'वाप और मैं", यह थोड़े ही वायदा किया था कि संगठन में रहेंगे। बाप तो वहुतअच्छा है, वाप के साथ रहना भी वहुतअच्छा है लेकिन संगठन में सवके संस्कारों में रहना, यह वहुतमुश्किल है। लेकिन यह भी वहुतसहज हो जायेगा क्योंकि मन से, दिल से हर आत्मा के प्रति दुआयें, शुभभावना, शुभकामना पावरपुलहोने के कारण दूसरेके संस्कार दव जायेंगे। वह आपका सामना नहीं करेंगे और दवते-दवते समाप्त हो जायेंगे। फिर कहेंगे - हाँ, हम 40 के साथ भी रह सकते हैं। इस वर्ष चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों को यह हर समय की नवीनता वा विशेषता अपने में लानी है।

➳ _ ➳ कभी-कभी सोचते हो ना कि अभी तो 9 लाख पूरेनहीं हुएहैं। अन्त तक 33 करोड़ देवतायें हैं - उसकी तो बात ही छोड़ो। 9 लाख तो अच्छी आत्मायें चाहिए। पहली राजधानी में अच्छी आत्मायें चाहिए। प्रजा भी अच्छी नम्बर वन चाहिए। क्योंकि वन-वन-वन शुरू होगा। तो उसमें जो भी प्रकृति होगी, व्यक्ति होंगे, वैभव होंगे - वे सब नम्बर वन होंगे। तो अभी नम्बर वन प्रजा 9 लाख बनाई है? कितने लाख तैयार किये हैं? आप जो रिपोर्ट बनाते हो उसमें तो कभी-कभी वाले भी एड करते हो ना। लेकिन अभी तो आधा भी नहीं हुआहै। नम्बर वन प्रजा भी कम से कम बाप के स्नेह का अनुभव अवश्य करेगी।

➳ _ ➳ सहयोग में रहते हैं, वह पहला कदम है। लेकिन दूसराकदम है सहयोगी, स्नेही बनेंगे। समर्पण नहीं हो, वह दूसरीबात है लेकिन सदा बाप का स्नेह रहे। सिर्फ परिवार वा भाई-बहिनों का स्नेह नहीं। अभी यहाँ तक पहुँचेहैं - जो सेवा करते हैं उन्हों प्रति स्नेही बनते। लेकिन बाप के स्नेहकी अनुभूति करें। उन्हों के भी दिल से बाबा निकले तब तो प्रजा बनेंगे। ब्रह्मा की प्रजा, पहले विश्व-महाराजन की बनेगी। जिसकी प्रजा बननी है, उसका स्नेह तो अभी से चाहिए ना। यह जो सोचते हो ना कि अभी तो बहुतसेवा पड़ी है, वह इस मन्सा-वाचा की सम्मिलित सेवा में विहंगमार्ग की सेवा का प्रभाव देखेंगे। पहले की सेवा से अभी की सेवा को विहंग-मार्ग की सेवा कहते हो। आगे चल करके और विहंग-मार्ग की सेवा का अनुभव करेंगे।

➢➢ संगठन में रहना मुश्किल क्यों हो जाता है?

➳ _ ➳ स्वभाव संस्कार का टकराव

➳ _ ➳ देह अभिमान

➳ _ ➳ मैं राईट हूँ... जो मैं कहूँ उसे सबको मानना चाहिए...

➳ _ ➳ चुगली करना

➳_ ➳ दोष निकालना

➳_ ➳ सूक्ष्म भेदभाव... ये हमारे शहर, हमारे सेंटर का है...

→ हमारा एक ही एड्रेस है परमधाम...

→ एक ही भाषा है हिंदी... किसी को समझ न आये तो ही दूसरी भाषा यूज़ करनी है...

➳_ ➳ नेगेटिव कमेन्ट करना...

➳_ ➳ कमजोरी का वर्णन करना, फैलाना...

→ किसी की भावना को हर्ट कर दिया तो वह आत्मा फिर कभी नहीं आएगी...

→ हमारे मुख से निकला छोटा सा व्यंग्य बाण हृदय को भेद सकता है...

➢➢ हम कहाँ कहाँ टकराव में आते हैं...

➳_ ➳ कमरे, स्थान पर... मधुबन में

→ किसी का व्यवहार देखकर डिस्टर्ब हो जाना...

→ कोई दो बजे उठता है तो चाहे कि दूसरा भी 2 बजे उठकर योग करे...

➳_ ➳ ओफिस में

→ हर काम एक्यूरेट चाहिए... किसी ने कुछ गडबड किया, तो ज्ञान योग सब गायब...

→ टाइम पर आना चाहिए... किसी ने लेट किया तो परेशान...

- हरेक की बुद्धि अपनी अपनी है...
- हर बात को साक्षी होकर देखना है...
- हर आत्मा की अपनी कमजोरी, विशेषता है...
  - ▶ जब तक यह नहीं समझेंगे, हम डिस्टर्ब होते रहेंगे...

➳_ ➳ सेवा

→ हमारा सुझाव मानना चाहिए...

→ सेवा साथी, सीनियर से टकराव

→ सूक्ष्म मनमुटाव

- ऐसा होने पर ज्ञान योग में बुद्धि नहीं लगती...
- ज्ञान होते हुए भी apply नहीं कर पाते...
  - ▶ स्वमान का अभ्यास करे... मैं जगतमाता हूँ... मुझे सबकी पालना करनी है...

➳_ ➳ लगाव

→ हर काम में वही साथी चाहिए...

- जिससे लगाव है वाही बाधा है...

■ उसे न हम सकाश दे सकते हैं, न मदद कर सकते हैं...

■ सकाश देने के लिए बेहद का वैराग्य चाहिए...

➳_ ➳ मृत्यु

→ हमारा सेवाधारी जो इतने साल हमारे साथ था, अब चला गया... और हम दुखी हो जाए..

➢➢ इस टकराव, कलह से बचने के लिए चाहिए शुभ भावना...

➳_ ➳ एक बार सम्पर्क वाली सभी आत्माओं पर नजर दौड़ा कर देखे... क्या मेरे मन में सबके लिए शुभ भावना है...

→ पहले स्वीकार करे कि हमारी शुभ भावना कम है...

→ हमें स्वयम को शुभ भावनाओं से भरना है...

→ शुभ भावना होगी तभी तो सकाश दे सकेंगे...